Date
13/04/2020

विषय – समकालीन भारत और शिक्षा
प्रकरण – भारतीय अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण के सन्दर्भ में शिक्षा

B.Ed. Ist year
Period-Ist

वैश्वीकरण का अर्थ
Meaning of Globalisation

वैश्वीकरण का अर्थ "राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था से जोड़ना है।"

चैम्बर शब्दकोश के अनुसार – "वैश्वीकरण का अर्थ है, वैश्विक अर्थात, विश्वव्यापी बना देना या सम्पूर्ण विश्व अथवा सभी लोगों को प्रभावित करना।"

अत: वैश्वीकरण की विचारधारा कि मान्यता है कि प्रतियोगिता, कुशलता को बढ़ायेगी। प्रतियोगिता का क्षेत्र पूरा विश्व होगा– कोई भी देश विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के अपने देश मे प्रवेश पर प्रतिबन्ध नही लगा सकेंगा।

वैश्वीकरण की आवश्यकता

(1) देश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए।
(2) बेरोजगारी को समाप्त करनें के लिए।
(3) तकनीकी शिक्षा के विकास के लिए।
(4) आर्थिक सरक्षण के लिए।
(5) सामाजिक एंव सांस्कृतिक विकास के लिए।
(6) विश्व उत्पादन मे वृद्धि लाने के लिए।
(7) शिक्षा को नवाचारो से जोड़ने के लिए।
(8) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग व सद्भावना के लिए

13-04-2020 10:52

वैश्वीकरण के सन्दर्भ मे शिक्षा
Education and Globalization

किसी भी देश के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि देश मे पर्याप्त मात्रा मे मानव ससांधन हो जो प्रकृतिप्रदत्त ससांधनो का समुचित प्रयोग कर सके।
मानव संसाधन के विकास मे सर्वप्रमुख स्थान शिक्षा का है उचित शिक्षा के अभाव में विशाल जनसंख्या वाले देश भारत मे भी उचित दक्षता प्राप्त मानव ससांधन की कमी महसूस की जा रही हैं।
अतः वैश्वीकरण के इस युग मे यह आवश्यक है कि हम अपने देश मे शिक्षा का न केवल विस्तार करे, वरन् उसमे गुणात्मक सुधार लाने पर भी ध्यान दें।

भारत मे शिक्षा के वैश्वीकरण को प्रभावित करने वाले कारक

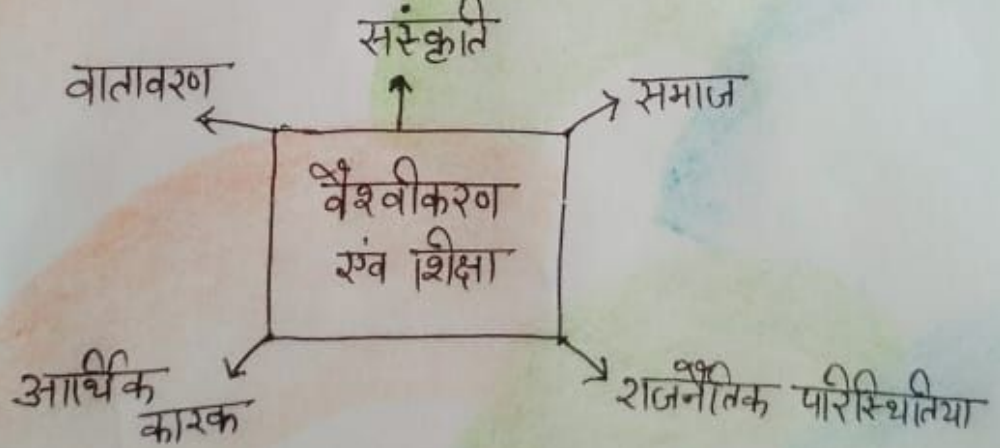

13-04-2020 10:52

वैश्वीकरण के शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण वर्तमान में शिक्षा में आई क्रान्ति का मुख्य कारण है जिसके कारण नई - नई शैक्षिक तकनीकियों का शिक्षा में समावेश किया जा रहा है। वैश्वीकरण ने संप्रेषण तकनीकी तथा सूचना प्रौद्योगिकी जैसे माध्यमों की सहायता से संसार में घटित हो रही घटनाओं, बढ़ रहे ज्ञान क्षेत्रों की जानकारी आज एक स्थान पर रहकर प्राप्त की जा सकती है।

संक्षिप्त में →
(1) आधुनिकीकरण की ओर अग्रसरता में सहायक,
(2) शोध एवं शैक्षिक अवसरों में उपलब्धता,
(3) तकनीकी ज्ञान, विज्ञान का प्रचार व प्रसार,
(4) नवीन पद्धतियों एवं नवाचारों से परिचित कराने में,
(5) शिक्षा में गुणवत्ता संवर्द्धन में सहायक,
(6) विश्व में सर्वश्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों से सम्पर्कता,

वैश्वीकरण के शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण ने शिक्षा को जीवनोन्मुखी न बनाकर प्रतियोगोन्मुखी बना दिया है, शिक्षा का माध्यम चेतना, रुचि, सृजनात्मकता न होकर केवल मुनाफा, उद्योगों का विस्तार एवं प्रबन्धन व तकनीकी हो गया है।

संक्षिप्त में - वैश्वीकरण के नकारात्मक बिन्दु

According to UNESCO → "किसी भी देश की शिक्षा का सम्बन्ध उस देश की संस्कृति के संरक्षण तथा विकास के लिए होना चाहिए।"

(1) परन्तु वैश्वीकरण के नाम पर शिक्षा का व्यवसायीकरण एवं पाश्चात्यीकरण हो रहा है।
(2) किताबी ज्ञान पर अधिक बल
(3) मौलिकता एवं रचनात्मकता का अभाव इत्यादि,

13-04-2020 10:53

शिक्षा का वैश्वीकरण तथा अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1991 - 1996

सूचना तथा प्रौद्योगिकी के विकास के फलस्वरूप मानवीय कार्य विश्व स्तरीय हो गए तथा शिक्षा के साथ-साथ प्रत्येक क्षेत्र पर वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा। शिक्षा की भूमिका पर विचार करने के लिए 1991 में यूनेस्को ने जैक्स डेलर की अध्यक्षता में एक अन्तर्राष्ट्रीय आयोग नियुक्त किया।

आयोग का प्रतिवेदन

आयोग ने अपना प्रतिवेदन सन 1996 में प्रस्तुत किया जिसका शीर्षक 'Learning the Treasure within' था। प्रतिवेदन में शिक्षा के चार स्तम्भ प्रस्तुत किए गए -

(i) Learning to Know

(ii) Learning to do

(iii) Learning to live with others &

(iv) Learning to be

आयोग के महत्वपूर्ण सुझाव

(1) शिक्षा के नीति निर्धारक एवं अध्यापकों के बीच अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है।
(2) शिक्षा व्यवस्था के सबसे अधिक निष्क्रिय पक्ष को उभारने के उपाय किये जाने चाहिए।
(3) सहायता राशि का एक चौथाई भाग शिक्षा पर व्यय होना चाहिए।
(4) शिक्षा में बौद्धिक सहयोग को बढ़ावा दिया जाना

13-04-2020 10:53

वैश्वीकरण : आज की आवश्यकता

वर्तमान मे शिक्षा का उद्देश्य मात्र नौकरी प्राप्त करना न होकर अधिक व्यापक होना चाहिए। प्रारम्भ से ही विद्यार्थियो मे उनके भौगोलिक व सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार स्वावलंबन बढाने वाली शिक्षा की व्यवस्था की जाए। जिससे नवयुवक रोजगार की तलाश मे अपनी ऊर्जा व्यय करने के बजाय देश के निर्माण पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे व विश्व मे देश की अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ता के लिए कार्य कर सकेंगे।

देशभक्ति, स्वास्थय संरक्षण सामाजिक संवेदनशीलता तथा आध्यात्मिकता शिक्षा के चार स्तम्भ है, इनको राष्ट्रीय शिक्षा नीति मे घोषित कर, शिक्षा मे स्वायत्ता को संवैधानिक स्वरूप प्रदान करना चाहिए।

अतः वर्तमान मे आवश्यकता है कि अपनी संस्कृति व मूल्यो को सुरक्षित रखते हुए, वैश्वीकरण को अपनी शिक्षा व्यवस्था मे प्रवेश देना होगा, जिसकी जिम्मेदारी अध्यापको, नीति निर्धारको व सरकार की बनती है, अन्यथा इस स्थिति मे भारतीय शिक्षा अपने मूल स्वरूप को खो देगी व विश्व गुरु बनने की राह मे भारत पिछड़ जाएगा।

"दीपक प्रज्जवलित हों, तो कुछ दीपक जला सकेंगे। यही वैश्विक शिक्षा का आधार हो।"

Nidhi Tyagi
[illegible] College

Complete

13-04-2020 10:53